मैथी की खेती

यह मसाले की एक प्रमुख फसल है। इसकी हरी पत्तियों में प्रोटीन, विटामिन सी तथा खनिज तत्व पाये जाते हैं। बीज मसाले तथा दवाई के रूप में उपयोगी है।

भूमि तथा जलवायु – मैथी को अच्छे जल निकास एवं पर्याप्त जीवांश पदार्थ वाली सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। परन्तु दोमट मिट्टी इसके लिये उत्तम रहती है। यह ठण्डे मौसम की फसल है तथा पाले व लवणीयता को भी कुछ स्तर तक सहन कर सकती है।

खेत की तैयारी – भारी मिट्टी में 3–4 व हल्की मिट्टी में 2–3 जुताई करके पाटा लगा दें तथा खरपतवार निकाल दें। जुताई के समय 25 किलो क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण भूमि में मिला दें।

उपयुक्त किस्में

आर एम टी -*I* (1991) – यह राजस्थान के सभी भागों के लिये उपयुक्त है। इसके दाने आकर्षक, चमकीले व पीले होते हैं। यह जड़ गलन एवं छाछ्या रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है एवं 140–150 दिन में पककर औसतन 15–20 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक उपज देती है।

आर एम टी 305 (2007) – यह एक बहु फलीय किस्म है जिसका औसत बीज भार और कटाई सूचकांक अधिक है

फलियाँ लम्बी और अधिक दानों वाली होती है। यह जड़ गलन एवं छाछ्या रोग के प्रति अधिक प्रतिरोधी है। 120–130 दिन में पककर औसतन 18 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक उपज देती है।

बीज की मात्रा एवं बुवाई – बुवाई अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक की जाती है। इसके लिये 20–25 किलो बीज की प्रति हैक्टेयर आवश्यकता होती है। नागौरी मेथी के लिये 75 किलोग्राम प्रति हेक्टर के हिसाब से बीज की बुवाई करें। बीजों को 30

सेन्टीमीटर की दूरी पर कतारों में 5 सेन्टीमीटर की गहराई पर बोना चाहिये।

खाद एवं उर्वरक – प्रति हैक्टेयर 10–15 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद डालें। इसके अलावा 40 किलो नत्रजन एवं 40 किलो फॉस्फोरस प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के समय खेत में ऊर कर देवें। नागौरी मेथी में 30 किलो नत्रजन प्रति हेक्टर की दर से बुवाई के समय ऊर कर देवें।

सिचाई एवं निराई गुड़ाई – बीज बोने के बाद हल्की सिंचाई करें उसके बाद आवश्यकतानुसार 15 से 20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिये। बुवाई के 30 दिन बाद निराई गुड़ाई कर पोधे की छंटाई कर देनी चाहिये। आवश्यकता हो तो 50 दिन बाद दूसरी निराई गुंड़ाई करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु रसायनों का प्रयोग करने से उपज व मुनाफे मे कोई कमी नही आती है।

पेण्डामिथेलिन पौन किलो सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर को 750 लीटर पानी मे घोले व बुवाई के दूसरे दिन छिड़क कर नमीयुक्त भूमि मे मिला दें।

प्रमुख कीट एवं व्याधियां

मोयला – यह कीट पौधों के कोमल भागों मे रस चूसता है। इसके आक्रमण से फसल को नुकसान होता है। नियंत्रण हेतु बीजों को इमिडाक्लोप्रिड 600 एफ. एस. दवा से 5.0 मिली प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचारित करें तथा आवश्यकता होने पर थायोमिथोक्जाम 25 डब्ल्यू.जी. (0.3 ग्राम प्रति लीटर) या एसिटामिप्रिड 20 एस.पी. (1.0 ग्राम/प्रति लीटर) या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एफ. एल. (5.0 मिली/प्रति लीटर) या मोनोक्रोटोफॉल 36 डब्ल्यू.एस.सी. या डाइमिथोएट 30 ई.सी. या मैलाथियान 50 ईसी एक मिलीलीटर का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता हो तो 10–15 दिन बाद इसे दोहरायें।

छाछ्या – इसके प्रकोप से पौधों की पत्तियों पर सफेद चूर्ण दिखाई देने लगता है व पूरे पौधों पर फैल जाता है। नियंत्रण हेतु फसल पर गन्धक के चूर्ण का 20–25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकें या डाइनोकेप एल सी एक मिली लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़कें। आवश्यकतानुसार 10–15 दिन बाद पुनः छिड़कें।

तुलासिता (डाउनी मिल्डयू) – इस रोग से पत्तियों की ऊपरी सतह पर पीले धब्बे दिखाई देते हैं व नीचे की सतह पर फफूंद की वृद्धि दिखाई देती है। उग्र अवस्था में रोगग्रसित पत्तियां झड़ जाती है। नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। आवश्यकता पड़ने पर इसे 15 दिन बाद दोहरायें।

कटाई एवं उपज – जब पौधों की पत्तियां झड़ने लगे व पौधे पीले रंग के हो जायें, तो पौधों को उखाड़कर या दंताली से काट कर खेत में छोटी–छोटी ढेरियों में रखें। सूखने के बाद कूट कर दाने अलग कर लें। साफ दानों को पूर्ण रुप से सुखाने के बाद बोरियों में भरें। समुचित कृषि क्रियाओं को अपनाने से 15 से 20 क्विण्टल बीज की प्रति हैक्टेयर पैदावार हो सकती है।

उन्नत कृषि यंत्रों का प्रयोग करें।

समय, श्रम एवं पैसा बचे